The Academic
International Journal of Multidisciplinary Research

An Online Peer Reviewed / Refereed Journal
Volume 2 | Issue 8 | August 2024
ISSN: 2583-973X (Online)
Website: www.theacademic.in

वैदिक शिक्षा प्रणाली का परिदृश्य

डॉ0 रजनीबाला
सहायक प्रोफेसर, रामा देवी कन्या महाविद्यालय, नोएडा
डॉ0 अनामिका
सहायक प्रोफेसर, रामा देवी कन्या महाविद्यालय, नोएडा

ARTICLE DETAILS

Research Paper

Keywords:
वेद, वैदिककालीन शिक्षा प्रणाली।

ABSTRACT

वैदिक कालीन शिक्षा प्रणाली विशिष्ट और आध्यात्मिक दृष्टिकोण से अत्यंत महत्वपूर्ण थी। इस प्रणाली में शिक्षा का मुख्य उद्देश्य छात्रों के आत्मविकास और दार्शनिक नैतिकता के प्रति संवेदनशीलता को बढ़ाना था। इसके अंतर्गत छात्रों को वेदों का अध्ययन, मनन और ध्यान कराया जाता था, जिससे उनका आध्यात्मिक विकास होता था। गुरूकुल संस्कृति इस प्रक्रिया का माध्यम थी, जहां छात्र गुरू के आश्रम में रह कर विभिन्न धार्मिक और दार्शनिक शिक्षाएं प्राप्त करते थे। वैदिक शिक्षा की विशेषता यह भी थी कि इसमें पाठयक्रम केवल वैदिक साहित्य और धर्मशास्त्र पर ही निर्धारित नहीं था, बल्कि छात्रों के व्यक्तिगत और सामाजिक विकास को भी ध्यान में रखा जाता था। इस प्रकार की शिक्षा उन्हें जीवन में संपूर्ण विकास के लिए तैयार करती थी, जिसमें अध्यात्मिकता, नैतिकता और सामर्थ्य के मार्ग दर्शन शामिल थे। आज की शिक्षा प्रणाली में भी वैदिक काल की शिक्षा के अनेक महत्वपूर्ण तत्व देखे जा सकते हैं, जैसे कि श्रवण, मनन और ध्यान की प्रक्रिया, जो छात्रों के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं। इन तत्वों को ध्यान में रख कर वर्तमान शिक्षा प्रणाली में भी छात्रों के व्यक्तिगत और आध्यात्मिक विकास को समृद्ध किया जा सकता है। इस प्रकार प्रस्तुत शोध आलेख का मुख्य उद्देश्य प्राचीन वैदिक शिक्षा प्रणाली के परिदृश्य को समझने का प्रयास करना है।

प्रस्तावना :–

वेद भारतीय संस्कृति में विशेष महत्व रखते हैं, जिन्हें भारत की शिक्षा व्यवस्था का मूल स्तोत्र या मुख्य स्तम्भ माना जाता है। ''वेद'' शब्द का उत्पत्ति संस्कृत शब्द ''विद'' से हुआ है, जिसका का अर्थ होता है ''ज्ञान प्राप्त करना''। वेदों को चार प्रमुख भागों में विभाजित किया गया हैः ऋग्वेद, सामवेद, यजुर्वेद और अथर्ववेद। वेदों को भारतीय संस्कृति का सर्वोत्तम ज्ञान स्रोत्त माना जाता है। प्रत्येक वेद कई सूक्तों, मंत्रों, और शिक्षाओं का संग्रह है, जो विभिन्न धार्मिक, दार्शनिक और सामाजिक विषयों पर प्रकाश डालते हैं। प्रत्येक वेद में चार भाग होते हैंः संहिताएँ (स्तुति और मंत्र), ब्राह्मण (कर्मकांड और अनुष्ठान), आरण्यक (दार्शनिक विवेचन) और उपनिषद (आध्यात्मिक शिक्षाएँ)।

ऋग्वेद को सबसे महत्वपूर्ण माना गया है क्योंकि इसमें मनुष्य के चारों आश्रमों–ब्रह्मचर्य, गृहस्थ, वानप्रस्थ और संन्यास का विस्तृत रूप मिलता है। यह वेद मनुष्य के जीवन के विभिन्न पहलुओं को समझने और उन्हें सही रूप में नियोजित करने के लिए मार्ग दर्शन प्रदान करता है। ब्रह्मचर्य आश्रम में छात्रों को विद्या की प्राप्ति के लिए समर्पित होने का मार्ग दिखाया गया है। गृहस्थ आश्रम में व्यक्ति को परिवार का पालन– पोषण करने का धर्म सिखाया गया है। वानप्रस्थ आश्रम में व्यक्ति को समाज से विलग्न हो कर आत्मचिंतन और ध्यान का समय मिलता है। संन्यास आश्रम में उसे सम्पूर्ण समर्पण और मोक्ष की अवधारणा के साथ आत्मा के प्राप्ति के लिए समर्पित होने का नियमित जीवन जीने का निर्देश दिया जाता है। इस प्रकार ऋग्वेद मानव जीवन के सम्पूर्ण सार्थकता और आदर्शों को समझने और उनके अनुसार चलने के लिए महत्वपूर्ण माना जाता है। संक्षेप में, वेद भारतीय संस्कृति का मौलिक स्तम्भ हैं और उन्हें सभी विषयों पर ज्ञान, आदर्श और आध्यात्मिक दिशा के रूप में महत्वपूर्ण माना जाता है।

प्राचीन भारतीय शिक्षा का उदभव वेदों से माना गया है। इतिहासकारों की मान्यता है कि भारत में 2500 से 500 ई0 पू0 तक वेदों का वर्चस्व रहा। वह इस काल को वैदिक काल कहते हैं। इस काल में भारत में एक समृद्ध शिक्षा प्रणाली का विकास हुआ जिसे वैदिक शिक्षा प्रणाली कहते हैं। यह शिक्षा प्रणाली वैदिक धर्म और दर्शन पर आधारित थी। विद्वानो ने शिक्षा की दृष्टि से इसे दो उप कालो में बांटा है– प्रारम्भिक वैदिक काल और उत्तर वैदिक काल। उत्तर वैदिक काल में ब्राह्मणों का वर्चस्व होने की वजह से इसे ब्राह्मणीय शिक्षा प्रणाली भी कहा जाता है। वैदिक काल में शिक्षा धर्म से प्रभावित थी। धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष जीवन का मूल माने जाते थे। वैदिक काल में जीवन ''परा'' और ''अपरा '' दो प्रमुख धार्मिक अवधारणाओं पर आधारित था।

शिक्षा का उद्देश्यः–

''परा'' का अर्थ होता है ब्रहम की प्राप्ति। ''परा'' अध्यात्मिक ज्ञान, आत्मा की प्रवति और ब्रह्म की उच्चतम सत्यता पर बल देता है। ''अपरा'' मानव जीवन के दैनिक कार्यों, सामाजिक नियमों और अध्यात्मिक साधनाओं को उचित दिशा और मार्ग प्रदान करती है। दोनों अवधारणाएं भारतीय दर्शन और धार्मिक शास्त्रों में महत्वपूर्ण स्थान रखती हैं और आत्मा के उत्कृष्टता के साथ–साथ जीवन में संतुलन को भी संदर्भित करती है। इनका उचित संतुलन शिक्षा के

द्वारा व्यक्ति को अध्यात्मिक मार्ग पर सही दिशा में ले जाना था ताकि वह मोक्ष को प्राप्त कर सके। वैदिक काल का दूसरा मुख्य शिक्षा का उदेश्य ज्ञान का विकास करना था। ज्ञानं म्नुज्स्य तृतीय नेत्रम् अर्थात ज्ञान को मनुष्य का तृतीय नेत्र माना जाता था। यह तीसरा नेत्र हमें स्थूल जगत का ज्ञान करवाता है। ज्ञान हमें सही और गलत के बीच अंतर को समझने में सक्षम बनाता है। वैदिक काल में शिक्षा का अन्य उद्देश्य छात्रों को धार्मिक और आध्यात्मिक ज्ञान के साथ–साथ जीवन कौशल, शिल्प, व्यवसाय और समाज के नियमों का ज्ञान प्राप्त करना था। अतः गुरूकुल में शिक्षा का मुख्य ध्येय छात्र को साक्षात्कार, धार्मिक तत्त्वों का ज्ञान और समाज सेवा के मूल्यों को सिखाना था।

शिक्षा की पाठयचर्या :–

वैदिक काल में शिक्षा दो स्तरों पर विभक्त थी – प्रारंभिक शिक्षा और उच्च शिक्षा। प्रारंभिक स्तर की शिक्षा की व्यवस्था घर पर ही होती थी। पांच वर्ष की आयु होने पर परिवार के कुल पुरोहित के द्वारा शुभ दिन का चयन करके बालक का विद्यारम्भ संस्कार किया जाता था। वैदिक काल में शिक्षा का स्वरूप व्यापक था और इसमें गुरूकुल पद्धति का महत्वपूर्ण स्थान था। उच्च शिक्षा की व्यवस्था गुरूकुल में होती थी। गुरू कुल पद्धति में छात्र गुरू के आश्रम में रहते थे और उनसे विद्या अथवा शिक्षा प्राप्त करते थे। गुरूकुल में प्रवेश लेने से पहले विद्यार्थियों का उपनयन संस्कार किया जाता था। उपनयन का अर्थ है ''गुरू के पास ले जाना''। भिन्न–भिन्न वर्णों के बालको का उपनयन संस्कार भिन्न–भिन्न आयु पर किया जाता था। ब्राह्मण के बालको के लिए यह आयु सीमा आठ वर्ष, क्षत्रिय वर्ण के बालको के लिए यह आयु सीमा दस वर्ष और वैश्य वर्ण के लिए यह आयु सीमा बारह वर्ष थी। वैदिक काल में शिक्षा का मुख्य उद्देश्य आध्यात्मिक और लौकिक दोनों प्रकार की उन्नति करने से था। आध्यात्मिक और लौकिक विकास को ध्यान में रखते हुए पाठयक्रम में विभिन्न प्रकार के विद्याओं का समावेश किया गया था। इनमें दो प्रमुख वर्ग थेः

परा या आध्यात्मिक विद्या : इस वर्ग में आत्मा के परमात्मा के साथ संबंधित विषय शामिल होते थे। इसमें चारों वेद (रिग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद, अथर्ववेद), वेदांग (शिक्षा, व्याकरण, छंद, निरूक्ति, ज्योतिष), उपनिषद (वेदांत) और पुराण (महाभारत, रामायण, भागवत) आते थे। ये विद्याएँ आध्यात्मिक ज्ञान और धार्मिक अनुभव को समझाने के लिए महत्वपूर्ण थीं।

अपरा या लौकिक विद्या : इस वर्ग में शास्त्र (आयुर्वेद, धनुर्वेद, शिल्पशास्त्र), विज्ञान (अंतरिक्ष विज्ञान, भूगोल, रसायनशास्त्र), भाषा (व्याकरण), लेखनी (छंद, नाटयशास्त्र) और योग (शरीरिक और मानसिक स्वास्थ्य) आते थे। इन विद्याओं का अध्ययन लौकिक ज्ञान और दैनिक जीवन में उपयोगी ज्ञान प्राप्त करने के लिए किया जाता था।

शिक्षण विधियाँ :–

वैदिक काल में शिक्षा प्रदान करने के लिए कई विभिन्न शिक्षण विधियाँ उपयोग की जाती थी। इनमें से कुछ प्रमुख शिक्षण विधियाँ निम्नलिखित हैं:

उपादेयता (उपदेश): गुरू कुल में छात्रों को शिक्षा प्रदान करने का मुख्य तरीका उपादेयता या उपदेश था। इसका मुख्य अर्थ होता है गुरू द्वारा छात्रों को ज्ञान देना या शिक्षा प्रदान करना। गुरूकुलों में छात्रों को सिर्फ शैक्षिक ज्ञान नही, बल्कि जीवन के सभी पहलुओं पर भी उपदेश दिया जाता था। गुरू अपने अनुयायियों को नैतिकता, धर्म, सामाजिक नियम और सामूहिक जीवन के तत्वों के बारे में भी उपदेश देते थे। साथ ही गुरूओं द्वारा छात्रों को विविध विषयों पर इस विधि द्वारा शिक्षा दी जाती थी।

श्रवण (सुनना): यह विद्यार्थियों के ज्ञान को विस्तारित करने का माध्यम था। छात्रों को श्रवण के माध्यम से वेदों के महत्वपूर्ण मंत्र, पुराणों की कथाएं और अन्य धार्मिक ग्रथों के सिद्धांतो को समझाया जाता था। यह उनके विचार धारा को संवेदनशील बनाता था और उन्हें समाज में अच्छे नागरिक और धार्मिक व्यक्ति बनने के लिए तैयार करता था। इसके अलावा, श्रवण की प्रक्रिया से छात्रों में ध्यान और धार्मिक अनुभव भी विकसित होता था। इस तरह, श्रवण गुरूकुलीय शिक्षा का एक महत्वपूर्ण अंग था, जो छात्रों को संपूर्ण विकास और ज्ञान की प्राप्ति में सहायक रहता था।

मनन(ध्यान और धारणा): मनन या ध्यान एक ऐसी प्रक्रिया है जिसमें छात्र अपने मन को एक विशेष विषय या विचार पर संरेषित करता है। छात्रों को विचार करने और ध्यान करने के लिए प्रोत्साहित किया जाता था। यह विषय को गहनता से समझनें में सहायक होता था और उनमें अध्ययन और विचार शीलता को बढ़ाता था।

मन्त्र–जाप (मंत्रो का जप): छात्रों को मंत्रों का जप करने को प्रोत्सहित किया जाता था जो उनके मन को शुद्ध और ध्यानित बनाने में मदद करता था।

आचरण और उदाहरण: आचरण और उदाहरण गुरू कुलों में शिक्षा की महत्वपूर्ण शिक्षण विधि थी, जिससे छात्रों को विषय को समझने में सहायता मिलती थी। गुरू कुलों में, शिक्षक या आचार्य विद्यार्थियों को विभिन्न विषयों के सिद्धांतो और तत्त्वों को समझाने के लिए अपने आचरण और उदाहरणों के माध्यम से शिक्षा देते थे।

चिंतन और चर्चा :चिंतन और चर्चा छात्रों के लिए बहुत महत्वपूर्ण शिक्षात्मक और विकासात्मक क्रियाएँ थी। गुरू कुलों और उनकी परंपराओं में, छात्रों को विभिन्न विषयों पर चिंतन करने और उसके बारे में चर्चा करने का अवसर प्राप्त होता था। इसके माध्यम से छात्रों की बुद्धि में नए विचारों और परिप्रेक्ष्यों का विकास होता था और वे विषय के गहराई में प्रवेश कर पाते थे।

गुरू–शिष्य परंपराः–

वैदिक काल में गुरू का स्थान अत्यंत महत्वपूर्ण था और उन्हें समाज में अत्यधिक सम्मान दिया जाता था। गुरू को 'परमब्रह्म' या दिव्य शक्ति का प्रतिनिधि माना जाता था। गुरू का स्थान वैदिक समाज में इतना ऊँचा था कि छात्र गुरू की निरंतर उपासना और सेवा करते थे। इसे ''गुरू–शिष्य परंपरा'' कहा जाता था, जिसमें गुरू शिष्य के आध्यात्मिक और व्यक्तिगत विकास के लिए पूर्ण रूप से समर्पित होते थे और छात्र भी उन्हें अपने आदर्श, आचरण और जीवन के प्रति आदर और समर्पण देते थे। इस प्रकार, वैदिक शिक्षा में गुरू का स्थान न केवल ज्ञान के संदर्भ में बल्कि आध्यात्मिक और नैतिक दृष्टि कोण से भी अत्यधिक महत्वपूर्ण था। गुरू और उनके शिष्यों के बीच का यह आत्मीय और आध्यात्मिक संबंध भारतीय संस्कृति के समृद्ध तत्त्वों का प्रभाव प्रकट करता था।

निष्कर्षः–

वैदिक शिक्षा प्रणाली एक प्राचीन शिक्षा पद्धति है जो भारतीय संस्कृति और धार्मिक परंपराओं का महत्वपूर्ण हिस्सा रही है। इस पद्धति में छात्रों को वेदों और अन्य धार्मिक ग्रंथों का अध्ययन कराया जाता था, जिससे उनका आध्यात्मिक और दार्शनिक विकास होता था। वैदिक शिक्षा का मुख्य उद्देश्य छात्रों के व्यक्तिगत और सामाजिक विकास को संवेदन शीलता और नैतिकता के माध्यम से प्रोत्सहित करना था। वैदिक शिक्षा के विभिन्न पहलुओं में गुरूकुल संस्कृति शामिल होती थी, जहां छात्र गुरू के आश्रम में रह कर गहरी शिक्षा प्राप्त करते थें इस प्रक्रिया में श्रवण, मनन और ध्यान की प्रक्रियाएं महत्वपूर्ण भूमिका निभाती थीं, जो छात्रों के ब्रह्मांडिक ज्ञान और आत्मविश्वास को बढ़ाती थी। छात्र न केवल वैदिक साहित्य का अध्ययन करते थें, बल्कि उन्हें व्यक्तिगत गुरूकुल की परंपरा के अनुसार विशेष शिक्षा भी प्राप्त होती थी। वैदिक शिक्षा प्रणाली अपने समय में शिक्षा की एक उत्कृष्ट रूप थी, जो छात्रो को जीवन के सभी पहलुओं में समृद्धि प्राप्त करने के लिए तैयार करती थी। इस शिक्षा प्रणाली का अध्ययन आज भी हमें यहां तक ले आता है कि कैसे आध्यात्मिक और दार्शनिक ज्ञान का संचार किया जाता था, जो वर्तमान शिक्षा प्रणाली में भी उपयोगी सिद्ध हो सकता है।

संदर्भ सूची

शुक्ला, सी. एस. (2008), 'भारत में शिक्षा प्रणाली का विकास', इंटरनेशनल पब्लिशिंग हाउस, मेरठ

लाल, आर. बी. एवम कान्त के. (2016), 'समकालीन भारत और शिक्षा', आर. लाल. बुक डिपो, मेरठ

वर्मा, जी. एस. (2004), 'भारत में शैक्षिक प्रणाली का विकास', लायल बुक डिपो, मेरठ

भूशण, डी. (2019), 'वैदिक कालीन शिक्षा व्यवस्था का स्वरूप', स्कोलरली रिसर्च जर्नल फॉर हयूमेनिटी साइंस एवं इंग्लिश लैंग्वेज, खंड 9, अंक 2, प. 11168–11174

लाल, आर. बी. एवम पलोड़, एस. (2021), 'कंटम्पररी इंडिया एवं एजुकेशन', आर. लाल. बुक डिपो, मेरठ

सेनी, ए. एवं सिंगवाल, एस. (2021), 'वैदिक कालीन शिक्षा प्रणाली की वर्तमान शिक्षक शिक्षा प्रणाली में प्रसंगिकता', इंटरनेशनल जर्नल ऑफ़ क्रिएटिव रिसर्च एंड इनोवेशन, खंड 6, अंक 1, प. 1–5.

द्विवेदी ए. के. (2019), 'आधुकिक काल में वैदिक शिक्षा की प्रासंगिता' आई ओ एस आर जर्नल ऑफ़ हुमानितिज एंड सोशल साइंस, खंड 24, अंक 1, पृ. 81–84.